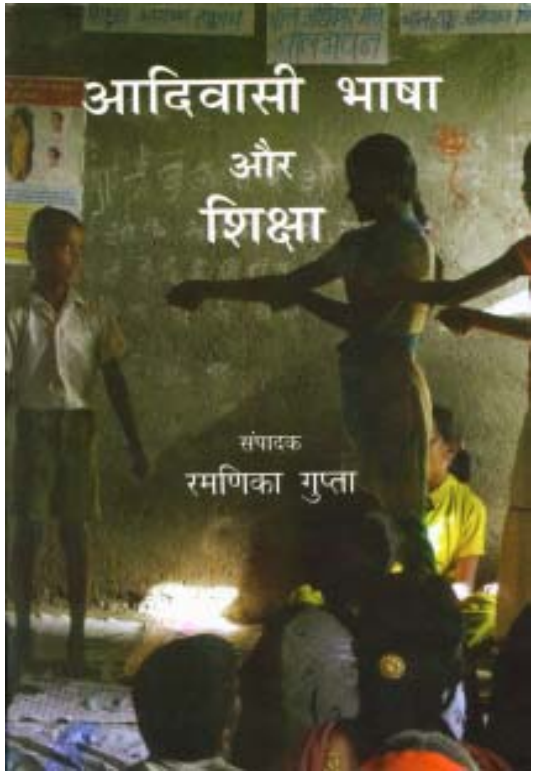

आदिवासी भाषा और शिक्षा

(2012)

सम्पादक : रमणिका गुप्ता

भाषा निस्संदेह संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है यह संप्रेषण केवल संवाद ही नहीं होता बल्कि विचारों का चाहक भी होता है। ये विचार उन भाषा-भाषियों के समग्र लोक, सामाजिक-सांस्कृतिक रीति-रिवाज़, स्थानीय विशिष्टताओं और उनकी बहुरंगी आभाओं एवं गतिविधियों को भी पूर्णतया प्रतिविम्बित करते हैं।

मुख्यधारा की भाषाएं कहीं दलित बन जाती हैं, तो कहीं सवर्ण! कहीं सर्वहारा हैं, तो कहीं कॉरपोरेट जगत की उद्घोषक। आदिवासी अपनी भाषाएं किसी पर थोपथे नहीं। वे मूलतः लोकतांत्रिक हैं। हम हजार फूल खिलने क्यों नहीं देते? भाषा-विमर्श के मूल में आज यही प्रश्न महत्वपूर्ण है जो जवाब खेजता है। इस पुस्तक के माध्यम से, जो लेख हमने प्रस्तुत किए हैं, उसके मूल में यही सोच यही चिंता है। यह पुस्तक भाषा-नीति तय करने के लिए सरकार को भी आदिवासी दृष्टि देने में सक्षम् होगी। भाषाविदों के लिए संभवतः यह पुस्तक ज़मीनी सच्चाइयों के दरवाज़े खोलने में सहायक होगी, क्योंकि इसमें लिखे गए लेख उनके हैं, जिन्हें अपनी भाषाओं के लिए चिंता है।

मूल्य : 250/-

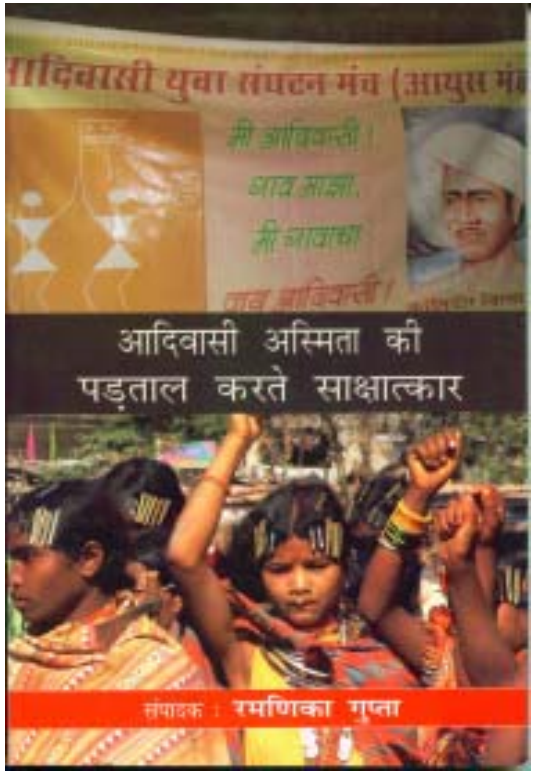

आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करते साक्षात्कार

(2012)

सम्पादक : रमणिका गुप्ता

इस पुस्तक में विस्थापन, पलायन, सांस्कृतिक, राजनीतिक व उनके प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के विरुद्ध उठी मुखर और सक्रिय आवाज़ स्वयं आदिवासियों की है। ये आवाज़ें जो देश के कोने-कोने से निकलकर अपने अधिकारों, चुनावों, विकल्पों, सरकार की गलत नीतियों और विकास के नाम पर विध्वंस के मॉडलों के खिलाफ साहित्यक, भाषाई, सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में मुखरित हो रही हैं को एक जगह समेटने की कोशिश है यह पुस्तक 'आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करते साक्षात्कार'।

मूल्य : 295/-

आदिवासी शौर्य की विद्रोह (पूर्वोत्तर)

(2012)

सम्पादक : रमणिका गुप्ता

इस पुस्तक में पूर्वोत्तर के अलग-अलग राज्यों व भाषा-भाषी वीर नायकों व नायिकाओं की शौर्यगाथाओं के अतिरिक्त पूर्वोत्तर में हुए विद्रोहों, प्रतिरोधात्मक आन्दोलनों पर शोध-परक सामग्री प्रस्तुत की गई है। ये सभी गाथाएँ पूर्वोत्तर के लेखकों ने लिजिन्द्रियों, लोककथाओं, लोकगीतों, बैलेड़ों व किवदंतियों तथा पूर्वोत्तर में उपलब्ध भिन्न एतिहासिक ग्रन्थों व दस्तावेजों में दर्ज टिप्पणियों के आधार पर तैयार की हैं, जिन्हें इतिहासकारों ने नज़र अदाज़ कर दिया था। इन गाथाओं व विद्रोहों के सूत्र अंग्रेजों द्वारा किये गये पत्राचार व रपटों में दर्ज हैं या लोक में लिजिन्द्रियों के रूप में प्रचलित हैं। इन गाथाओं का चयन तथा हिन्दी में अनुवाद एवम् सम्पादन रमणिका फाउंडेशन ने संपन्न करवाया है।

यह पुस्तक अब तक नज़र अदाज़ किये गये पूर्वोतर में घटित इतिहास को गहराई तक समझने, जानने और शेष भारत का उनसे अपना दर्द का रिश्ता जोड़कर संवाद कायम करने का एक सक्षम् माध्यम है।

मूल्य : 300/-

उनकी जिजीविषा : उनका संघर्ष

(2006)

सम्पादक : हेमलता महेश्वर

हिन्दी की कथा-लेखिका प्रायः मध्यम वर्ग से ही आती हैं। वे एक सीमित दायरे में ही घूती रहती हैं। इस स्थिति में रमणिका गुप्ता के दो उपन्यास 'सीता' और 'मौसी' एक नई शुरुआत की तरह सामने आए हैं।

रमणिका गुप्ता संभवतः हिन्दी की इकलौती कथा-लेखिका हैं, जिन्होंने झारखण्ड के उन इलाकों में जहाँ आदिवासी अपने जंगल-ज़मीन से विस्थापित होकर मजदूर बना दिए गए हैं, की त्रासदी को बेहद प्रमाणिक व मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। इन दोनों उपन्यासों में उन्होंने अदम्य जिजीविषा और दुर्दुष संघर्ष का माद्दा रखने वाली 'सीता' और 'मौसी' सरीखी आदिवासी नायिकाओं की सृष्टि भी की है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रतिष्ठित से लेकर नये लेखकों-आलोचकों ने अपने-अपने नज़रिये से इन उपन्यासों पर जो विवेच्य दृष्टि डाली है। अपने पाठ के लिए ये उपन्यास, जिस वैचारिकता की मांग करते हैं उनका दरवाज़ा इन्हीं समीक्षाओं के माध्यम से खुलता है। निश्चय ही यह पुस्तक इनके पाठ के प्रति गहरी उत्सुकता जगाने में सफल होगी।

मूल्य : 150/-

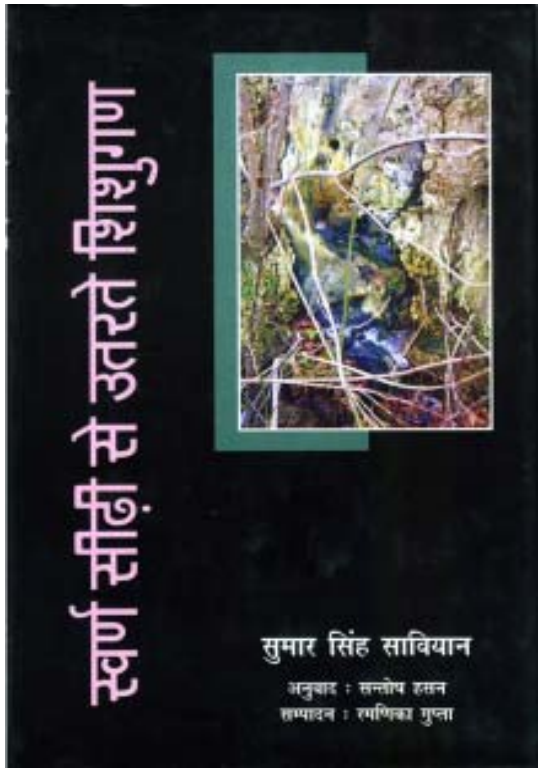

स्वर्ण सीढ़ी से उतरते शिशुगण

(2012)

सुमार सिंह सावियान/अनु.: संतोष हसन
सम्पादक : रमणिका गुप्ता

'स्वर्ण-सीढ़ी से उतरते शिशु' पूर्वोत्तर भारत की खासी जनजाति की लोककथाओं का संकलन है, जिसमें इस जनजाति का इलिहास, मान्यताएं और जन-जीवन की झलक देने वाली कई कथाएं सम्मिलित हैं। ये कथाएं जहाँ एक ओर अपनी संस्कृति और अस्तित्व को बचाए और बनाए रखने के लिए किए गए इनके प्रयासों, इनके शौर्य और पराक्रम, इनकी सोच और सरोकारों तथा इनकी मान्यताओं और कठिनाइयों का भी परिचय देती हैं, वहीं वे इनके प्रकृति प्रेम, पर्यावरण के प्रति चिन्ता और पशु-पक्षियों के साथ सह-अस्तित्व की भावना को भी बखूबी उजागर करती हैं। मातुसत्तात्य इस प्रदेश की सस्कृति, इतिहास भी उसके मिथकों में कल्पना की उड़ान और जीवन से जुड़ाव हमें उनकी उदात्त मानसिकता से स्वरूप होने का मौका देता है।

अदेखे भारत को जानने के लिए इस पुस्तक से गुजरना जरूरी है।

मूल्य : 150/-

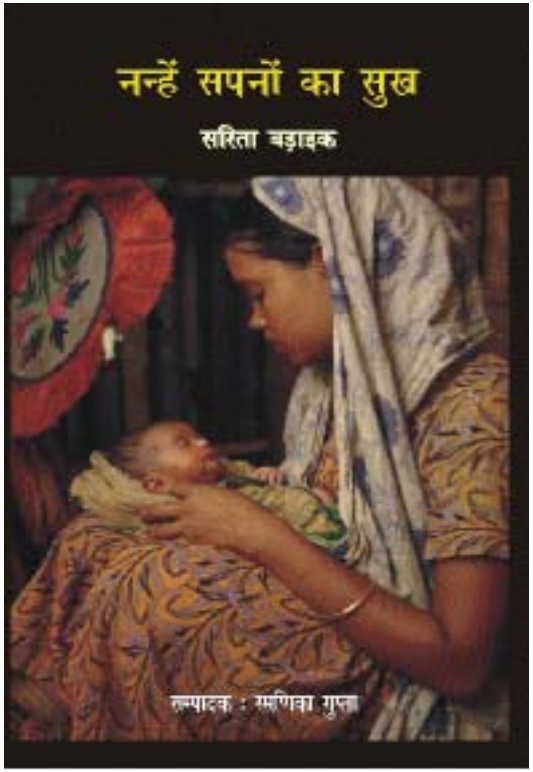

नन्हें सपनों का सुख

(2013)

सरिता बड़ाइक

सरिता सिंह बड़ाइक की कविता जीवन से भाषा तक की नयी खोज की तरह है। वे एक ऐसी 'चीक बड़ाइक' जनजाति से आती हैं, जिसकी अस्मिता ही नहीं अस्तित्व भी खतरे में है।

सरिता हिंदी और नागपुरिया में लिखती हैं और अपनी पहचान के संकट और संघर्ष को लगातार अपनी कविता का विषय बनाती हैं।

सरिता की कविता का संसार एक बिल्कुल ही नया संसार है। अछूती प्रकृति, अछूते मानवीय संबंध, अलग तरह के जीवन संघर्ष सब कुछ ऐसे हैं, जो शायद पहली बार कविता में आ रहे हैं।

यह कहना बेमानी है कि सरिता की कविताओं में एक ताजगी है यह तो हर अच्छे नये कवि में होती है। यहाँ तो कविता की पूरी दुनिया ही नयी है, जिसके लिए हमें सरिता के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

मूल्य : 150/-